लहरी

बेटी

आत्माराम मथरान, FE 325

"पापा देखो मेंहदी वाली, मुझे मेंहदी लगवानी है"

बारह साल की बेटी बाज़ार में बैठी मेंहदी वाली को देखते ही मचल गयी...

“कैसे लगाती हो मेंहदी ”। पापा नें मेंहदी वाली से सवाल किया...

“एक हाथ के पचास, दो के सौ" ...मेंहदी वाली ने जवाब दिया.

पापा को मालूम नहीं था मेंहदी लगवाना इतना मँहगा हो गया है.

“नहीं भई एक हाथ के बीस लो, वरना हमें नहीं लगवानी.”

यह सुनकर बेटी नें मुँह फुला लिया.

“अरे अब चलो भी, नहीं लगवानी इतनी मँहगी मेंहदी”

पापा के माथे पर लकीरें उभर आयीं .

“अरे लगवाने दो ना साहब.. अभी आपके घर में है तो आपसे लाड़ भी करा सकती है..."

"कल को पराये घर चली गयी तो पता नहीं ऐसे मचल पायेगी या नहीं. तब आप भी तरसोगे बिटिया की फरमाइश पूरी करने को..."

मेंहदी वाली के शब्द थे तो चुभने वाले पर उन्हें सुनकर पापा को अपनी बड़ी बेटी की याद आ गयी.. जिसकी शादी उसने तीन साल पहले एक खाते-पीते पढ़े लिखे परिवार में की थी.

आज वह छटपटाता है कि उसकी वह बेटी फिर से उसके पास लौट आये..और वह चुन चुन कर उसकी सारी अधूरी इच्छाएँ पूरी कर दे... पर वह अच्छी तरह जानता है कि अब यह असंभव है.

“लगा दूँ बाबूजी...? एक हाथ में ही सही ”

मेंहदी वाली की आवाज से पापा की तंद्रा टूटी...

“हाँ हाँ लगा दो. एक हाथ में नहीं दोनों हाथों में. और हाँ, इससे भी अच्छी वाली हो तो वो लगाना.”

पापा ने डबडबायी आँखें पोंछते हुए कहा और बिटिया को आगे कर दिया.

जब तक बेटी हमारे घर है उसकी हर इच्छा जरूर पूरी करें, क्या पता आगे कोई इच्छा पूरी हो पाये या ना हो पाये।

ये बेटियां भी कितनी अजीब होती हैं। जब ससुराल में होती हैं तब माइके जाने को तरसती हैं।सोचती हैं कि घर जाकर माँ को ये बताऊँगी पापा से ये मांगूंगी बहिन से ये कहूँगी भाई को सबक सिखाऊंगी और मौज मस्ती करुँगी।

लेकिन, जब सच में मायके जाती हैं तो एकदम शांत हो जाती हैं किसी से कुछ भी नहीं बोलती। बस माँ बाप भाई बहन से गले मिलती हैं। बहुत खुश होती हैं। भूल जाती हैं कुछ पल के लिए पति ससुराल।

क्योंकि, एक अनोखा प्यार होता है मायके में। एक अजीब कशिश होती है मायके में। ससुराल में कितना भी प्यार मिले, माँ बाप की एक मुस्कान को तरसती है ये बेटियां।

ससुराल में कितना भी रोएँ। पर मायके में एक भी आँसू नहीं बहाती ये बेटियां। क्योंकि बेटियों का सिर्फ एक ही आँसू माँ बाप भाई बहन को हिला देता है। रुला देता है।

कितनी अजीब है ये बेटियां। कितनी नटखट है ये बेटियां भगवान की अनमोल देंन हैं ये बेटियां

हो सके तो, बेटियों को बहुत प्यार दें, उन्हें कभी भी ना रुलायें, क्योंकि आज की ये अनमोल बेटियां कल की जननी हैं। ये दो परिवारों को जोड़ती हैं, दो रिश्तों को साथ लाती हैं, अपना घर छोड़कर एक नया घर बसाती हैं, एक नई वंश परम्परा चलती हैं...

और यह सब अपने प्यार, मुस्कान और मजबूत कंधों के बल पर।

रिज़ॉर्ट मे विवाह

रजनी मथरान, FE 325

नई सामाजिक बीमारी,
सामाजिक भवन अब उपयोग में नहीं लाए जाते हे,,,,
शादी समारोह हेतु यह सब बेकार हो चुके हैं,
कुछ समय पहले तक शहर के अंदर मैरिज हॉल मैं शादियां होने की परंपरा चली परंतु वह दौर भी अब समाप्ति की ओर है!
अब शहर से दूर महंगे रिसोर्ट में शादीया होने लगी है!
शादी के 2 दिन पूर्व से ही ये रिसोर्ट बुक करा लिया जाते हैं और शादी वाला परिवार वहां शिफ्ट हो जाता है।
आगंतुक और मेहमान सीधे वही आते हैं और वहीं से विदा हो जाते हैं।
जिसके पास चार पहिया वाहन है वही जा पाएगा, दोपहिया वाहन वाले नहीं जा पाएंगे।
बुलाने वाला भी यही स्टेटस चाहता है।

और वह निमंत्रण भी उसी श्रेणी के अनुसार देता है।
दो तीन तरह की श्रेणियां आजकल रखी जाने लगी है,
किसको सिर्फ लेडीस संगीत में बुलाना है !
किसको सिर्फ रिसेप्शन में बुलाना है !
किसको कॉकटेल पार्टी में बुलाना है !
और किस वीआईपी परिवार को इन सभी कार्यक्रमों में बुलाना है!!
इस आमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है!
सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को

आमंत्रित किया जाता है!!

महिला संगीत में पूरे परिवार को नाच गाना सिखाने के लिए महंगे कोरियोग्राफर 10-15 दिन ट्रेनिंग देते हैं!

मेहंदी लगाने के लिए आर्टिस्ट बुलाए जाने लगे हैं
मेहंदी में सभी को हरी ड्रेस पहनना अनिवार्य है
जो नहीं पहनता है उसे हीन भावना से देखा जाता है लोअर केटेगरी का मानते हैं

फिर हल्दी की रस्म आती है
इसमें भी सभी को पीला कुर्ता पजामा पहनना अति आवश्यक है इसमें भी वही समस्या है जो नहीं पहनता है उसकी इज्जत कम होती है

इसके बाद वर निकासी होती है
इसमें अक्सर देखा जाता है जो पंडित को दक्षिणा देने में 1 घंटे डिस्कशन करते हैं
वह बारात प्रोसेशन में 5 से 10 हजार नाच गाने पर उड़ा देते हैं
एक नई परंपरा भी है बैंड वाले के पास जो गाड़ी रहती है उसमें सोमरस रखा जाता है बाराती बारी-बारी से उसके पास जाते हैं और अपना काम करके आते जाते हैं

इसके बाद रिसेप्शन स्टार्ट होता है
स्टेज पर वरमाला होती है पहले लड़की और लड़के वाले मिलकर हंसी मजाक करके वरमाला करवाते थे,,,,,, आजकल स्टेज पर कंडे के धुंए की धूनी छोड़ देते है
दूल्हा दुल्हन को अकेले छोड़ दिया जाता है
बाकी सब को दूर भगा दिया जाता है
और फिल्मी स्टाइल में स्लो मोशन में वह एक दूसरे को वरमाला पहनाते हैं
साथ ही नकली आतिशबाजी भी होती है

स्टेज के पास एक स्क्रीन लगा रहता है
उसमें प्रीवेडिंग सूट की वीडियो चलती रहती है
जिसमें यह बताया जाता है की शादी से पहले ही लड़की लड़के से मिल चुकी है और कितने अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहन कर
कहीं चट्टान पर
कहीं बगीचे में
कहीं कुए पर
कहीं बावड़ी में
कहीं श्मशान में कहीं नकली फूलों के बीच अपने परिवार की इज्जत को नीलाम कर के आ गई है

प्रत्येक परिवार अलग-अलग कमरे में ठहरते हैं
जिसके कारण दूरदराज से आए बरसों बाद रिश्तेदारों से मिलने की उत्सुकता कहीं खत्म सी हो गई है!!
क्योंकि सब अमीर हो गए हैं पैसे वाले हो गए हैं!
मेल मिलाप और आपसी स्नेह खत्म हो चुका है!
रस्म अदायगी पर मोबाइलो से बुलाये जाने पर

कमरों से बाहर निकलते हैं !
सब अपने को एक दूसरे से रईस समझते हैं!
और यही अमीरीयत का दंभ उनके व्यवहार से भी झलकता है !
कहने को तो रिश्तेदार की शादी में आए हुए होते हैं
परंतु अहंकार उनको यहां भी नहीं छोड़ता !
वे अपना अधिकांश समय करीबियों से मिलने के बजाय अपने अपने कमरो में ही गुजार देते हैं!!

हमारी संस्कृति को दूषित करने का बीड़ा ऐसे ही अति संपन्न वर्ग ने अपने कंधों पर उठाए रखा है

मेरा अपने मध्यमवर्गीय समाज बंधुओं से अनुरोध है
आपका पैसा है ,आपने कमाया है,
आपके घर खुशी का अवसर है खुशियां मनाएं,
पर किसी दूसरे की देखा देखी नही!

कर्ज लेकर अपने और परिवार के मान सम्मान को खत्म मत करिएगा!

जितनी आप में क्षमता है उसी के अनुसार खर्चा करिएगा
4 - 5 घंटे के रिसेप्शन में लोगों की जीवन भर की पूंजी लग जाती है !

दिखावे की इस सामाजिक बीमारी को अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रहने दीजिए!

अपना दांपत्य जीवन सर उठा के, स्वाभिमान के साथ शुरू करिए और खुद को अपने परिवार और अपने समाज के लिए सार्थक बनाइए !

झरोखा

कृष्ण कुमार पेड़ी वाल, FE 255

मानव दिमाग की खूबसूरत उपज ,
झरोखा,झरोखा ना होता तो
किसी भी कृति का क्या रूप होता?
महल महल नहीं होता,
हवा महल नहीं होता,
दिन में ना सूरज दिखता
ना रात में चांद, सितारे
ना बारिश की बूंदें
ना हवा का झोंका आता,
ना गौरी दिखती मजनूं को,
वो कंकड़ में लिपटा खत, कहां फेंकता,
कहां खड़ी हो सजनी, साजन
की बाट जोहती,
कहां बैठ कर कागा
आने वाले की आहट देता,
इतिहास भी गवाह है
खिलजी ने झरोखे से
ना देखा होता रानी रूपमती को,
भारतीय नारियों का इतना
आत्मघाती अग्नि दाह ना होता।
उसी मानव के दिमाग की
वीभत्स उपज,एक बड़ा झरोखा,
जो दागता है गोले,देता है युद्ध की ललकार,
करता है संहार ही संहार,
और एक छोटा झरोखा,
फैलाता है दहशत ,आतंकी दौर,
किसान, बीज कहां बोता
अन्न कहां से आता,
दूसरी ओर,ईश्वर ने भी सोच,समझ
बनाए पांच झरोखे,मानव देह में,
सच,पूछो तो झरोखा ना होता तो,
प्राणी कहां से जीवन पाता।,?